ब्राह्मण जन्म का आदि वरदान – स्नेह की शक्ति

18-1-94

स्नेह की शक्ति के वरदान द्वारा असम्भव को सम्भव बनाने वाले स्नेह के सागर बापदादा बोले–

आज चारों ओर के सर्व बच्चों की स्नेह भरी स्मृति-ाँ समर्थ बापदादा के पास स्नेह के सागर समान पहुँच गई। हर एक बच्चे के दिल में दिलाराम समा-ाा हुआ है और दिलाराम के दिल में सर्व स्नेही बच्चे समा-ो हुए हैं। स्नेह बहुत बड़ी शक्ति है।

* स्नेह की शक्ति मेहनत को सहज कर देती है। जहाँ मोहब्बत है वहाँ मेहनत नहीं होती। मेहनत मनोरंजन बन जाती है। खेल लगता है।
* स्नेह की शक्ति देह और देह की दुनि-ाा सेकण्ड में भूला देती है। स्नेह में जो भुलाना चाहें वह भुला सकते हैं, जो -ाद करना चाहें उसमें समा जाते हैं।
* स्नेह की शक्ति सहज समर्पण करा देती है।
* स्नेह की शक्ति बाप समान बना देती है।
* स्नेह सदा हर सम-ा परमात्म साथ का अनुभव कराता है।
* स्नेह सदा अपने ऊपर बाप की दुआओं का हाथ छत्रछा-ाा समान अनुभव कराता है।
* स्नेह असम्भव को सम्भव इतना सहज कर देता जैसे का-र्ा हुआ ही पड़ा है।
* स्नेह निष्पल (हर सम-ा)निश्चिन्त अनुभव कराता है।
* स्नेह हर कर्म में निश्चित विज-ाी स्थिति का अनुभव कराता है। ऐसे स्नेह की शक्ति अनुभव करते हो ना?

बापदादा जानते हैं कि अनेक जन्म अनेक प्रकार की मेहनत कर थकी हुई आत्मा-ों हैं। भिन्न-भिन्न बन्धनों में बन्धी हुई आत्मा-ों होने के कारण मेहनत करती रही हैं। इसलि-ो बापदादा मेहनत से मुक्त होने के लि-ो सहज विधि 'स्नेह की शक्ति' सभी बच्चों को वरदान में देते हैं। अपने ब्राह्मण जीवन के आदि सम-ा को -ाद करो। तो जन्मते ही सभी को स्नेह की शक्ति ने ही न-ाा जीवन दि-ाा। स्नेह की अनुभूति के लि-ो मेहनत की? मेहनत करनी पड़ी? सहज अनुभव कि-ाा ना।

तो -ाह आदि जन्म की अनुभूति ही वरदान है। प्-ार-प्-ार में ही खो ग-े। सदा इस स्नेह के वरदान को स्मृति में रखो। मेहनत के सम-ा इस वरदान द्वारा मेहनत को परिवर्तन कर सकते हो। बापदादा को बच्चों का मेहनत अनुभव करना अच्छा नहीं लगता। स्नेह की शक्ति की विस्मृति मेहनत अनुभव कराती है।

* कितनी भी बड़ी कैसी भी परिस्थिति हो प्-ार से, स्नेह से परिस्थिति रूपी पहाड़ भी परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन सकता है। पत्थर को पानी बना सकते हो। कैसा भी मा-ा का विकराल रूप वा रॉ-ाल रूप सामना करे तो सेकण्ड में स्नेह के सागर में समा जाओ तो सामना करने की मा-ा की शक्ति समाप्त हो जा-ेगी। आपके समाने की शक्ति छू-मन्त्र नहीं लेकिन शिव-मन्त्र बन जा-ेगी। सबके पास शिव-मन्त्र की शक्ति है ना कि खो जाती है? शिव स्नेह में समा जाओ, सिर्फ डुबकी मारकर नहीं निकल आओ। थोड़ा सम-ा स्मृति में रहते हो–मीठा बाबा, प्-ारा बाबा, तो डुबकी लगाकर फिर निकल आते हो तो मा-ा की नज़र पड़ जाती है। समा जाओ, तो मा-ा की नज़र से दूर हो जा-ेंगे। और कुछ भी नहीं आए तो स्नेह की शक्ति जन्म का वरदान है। उस वरदान में खो जाओ। खो जाना नहीं आता है? स्नेह तो सहज है ना! सबको अनुभव है ना! कोई है जिसको ब्राह्मण जीवन में रूहानी स्नेह का अनुभव नहीं हो, है कोई?

* स्नेह ही सहज -ोग है, स्नेह में समाना ही सम्पूर्ण ज्ञान है।
* आज के दिन का महत्व भी स्नेह है।

अमृतवेले से विशेष किस लहर में लहरा रहे हो? बापदादा के स्नेह में ही लहरा रहे हो। सर्व आत्माओं के अन्दर एक बाप के सिवा-ा और कुछ -ाद रहा? सहज -ाद रही ना कि मेहनत करनी पड़ी? तो सहज कैसे बनी? स्नेह के कारण। तो व-ा सिर्फ आज का दिन स्नेह का है? संगम-ुग है ही परमात्म-स्नेह का -ुग। तो -ुग के महत्व को जान स्नेह की अनुभूति-ों को अनुभव करो। स्नेह का सागर स्नेह के हीरे-मोति-ों की थालि-ाँ भरकर दे रहे हैं। तो अपने को सदा भरपूर करो। थोड़े से अनुभव में खुश नहीं हो जाओ। सम्पन्न बनो। भविष्-ा में तो स्थूल हीरे-मोति-ों से सजेंगे। -ो परमात्म-प्-ार के हीरे-मोती अनमोल हैं, तो इससे सदा सजे सजा-ो रहो।

चारों ओर के बच्चों की -ाद, स्नेह के गीत बापदादा सदा भी सुनते रहते

हैं लेकिन आज विशेष स्नेह स्वरूप बच्चों को स्नेह के रिटर्न में सदा स्नेही भव, सदा स्नेह के वरदान द्वारा सहज उड़ती कला का विशेष फिर से वरदान दे रहे हैं। सदा जैसे छोटे बच्चे होते हैं, कोई भी मुश्किल बात आ-ोगी वा कोई भी परिस्थिति आ-ोगी तो मात-पिता की गोदी में समा जा-ोंगे, ऐसे सेकण्ड में स्नेह की गोदी में समा जाओ तो मेहनत से बच जा-ेंगे। सेकण्ड में उड़ती कला द्वारा बापदादा के पास पहुँच जाओ तो कैसे भी स्वरूप में आई हुई मा-ा दूर से भी आपको छू नहीं सकेगी। क-ोंकि परमात्म-छत्रछा-ा के अन्दर तो क-ा लेकिन दूर से भी मा-ा की छा-ा आ नहीं सकती। तो बच्चा बनना अर्थात् मा-ा से बचना। बच्चा बनना तो अच्छा है ना। बच्चा बनने का अर्थ ही है स्नेह में समा जाना। अच्छा!

चारों ओर के दिलाराम के दिल में समा-ो हुए बच्चों को, सदा मेहनत को मोहब्बत में परिवर्तन करने वाली शक्तिशाली आत्माओं को, सदा परमात्म-स्नेह के संगम-ुग को महान् अनुभव करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा स्नेह की शक्ति से बाप के साथ और दुआओं के हाथ को अनुभव कर औरों को भी कराने वाली विशेष आत्माओं को, सदा स्नेह के सागर में समा-ो हुए समान बच्चों को स्नेह के सागर बापदादा का -ाद-प्-ार और नमस्ते।

दादि-ों से मुलाकात

आज के दिन क-ा-क-ा -ाद आ-ा? विशेष विल पॉवर के हाथ -ाद आ-ो? विल पॉवर सब का-र्ा सहज करा देती है। ब्रह्मा बाप ज्-ादा -ाद आ-ा -ा बाप-दादा दोनों -ाद रहे? फिर भी ब्रह्मा बाप की -ाद के चरित्र सभी को विशेष -ाद आते रहे। ब्रह्मा बाप ब्रह्मा बना ही तब जब बाप-दादा कम्बाइन्ड हुए। परमात्म-प्रवेशता के साथ ही ब्रह्मा का कर्तव्-ा शुरु हुआ। इस अव्-ाक्त स्वरूप के अव्-ाक्त रूप के चरित्र भी न्-ारे और प्-ारे हैं। २५ वर्ष की सेवा की हिस्ट्री आदि से -ाद करो–कितनी तीव्र गति की हिस्ट्री है। अव्-ाक्त होना अर्थात् तीव्र गति से सर्व का-र्ा होना। सम-ा का परिवर्तन भी फ़ास्ट और सेवा की वृद्धि की गति भी फ़ास्ट। फ़ास्ट हुई है ना? इसलि-ो अव्-ाक्त होने से सम-ा को भी तीव्र गति मिली है तो सेवा को भी तीव्र गति मिली है। अव्-ाक्त पार्ट में आने वाली आत्माओं को भी

पुरुषार्थ में तीव्र गति का भाग-ा सहज मिला हुआ है। अव्-ाक्त पार्ट में आई हुई आत्माओं को लास्ट सो फ़ास्ट, फ़ास्ट सो फ़र्स्ट का वरदान प्राप्त है। (सभा से)

वरदान को का-र्ा में लगाओ, सिर्फ स्मृति तक नहीं। सम-ा प्रमाण वरदान को स्वरूप में लाओ। वरदान को स्वरूप में लाने से स्वत: ही फ़ास्ट गति का अनुभव करेंगे। अव्-ाक्त पालना सहज ही शक्तिशाली बनाने वाली है। इसलि-ो जितना आगे बढ़ना चाहो, बढ़ सकते हो। बापदादा और निमित्त आत्माओं की आप सबके ऊपर विशेष सदा आगे उड़ने की दुआएं हैं। ऐसे है ना? दादि-ों की भी दुआएं हैं। सिर्फ फा-ादा ले लो। मिलता बहुत है, -ाूज़ कम करते हो। सिर्फ बुद्धि के किनारे रखते नहीं रहो, खाओ, खर्च करो। आता है -ाूज़ करना, खर्च करना आता है कि सम्भाल कर रखते हो? बहुत अच्छा, बहुत अच्छा--ो सम्भाल कर रखना है। अच्छाई को स्व-ं प्रति और दूसरों के प्रति का-र्ा में लगाओ। -ाहाँ खर्चना अर्थात् बढ़ाना है। जैसे आजकल का फ़ैशन है ना–जो अमूल-ा चीज़ होती है वह कहाँ रखते हैं? (लॉकर में) -ाूज़ नहीं करते, लॉकर में रखते हुए खुश होते हैं। तो कई बार ऐसे करते हैं–पॉइन्ट बड़ी अच्छी है, विधि बड़ी अच्छी है, सिर्फ बुद्धि के लॉकर में देखकर खुश हो जाते हैं। तो आप सभी लॉकर में रखते हो -ाा -ाूज़ करते हो? अच्छा!

पाण्डव सेना का क-ाा हाल है? (अच्छा है) सिर्फ अच्छा-अच्छा कहने वाले तो नहीं ना। ऐसी सेना तै-ाार हो जो सेकण्ड में जो ऑर्डर मिले कर ले। ऐसे तै-ाार हैं? शक्ति सेना तै-ाार है? शक्ति-ों की सेवा अपनी है, पाण्डवों की सेवा अपनी है। पाण्डवों के सह-ोग के बिना भी शक्ति-ां नहीं चल सकती, शक्ति-ों के सह-ोग के बिना भी पाण्डव नहीं चल सकते।

(दादी जी ने मैक्सिको की कानफ्रेन्स का समाचार बापदादा को सुना-ाा)

अच्छा है साइन्स वाले तो काम में लगे ही हैं। प्र-ोग करने में साइन्स वाले होशि-ार होते हैं ना। तो एक भी अच्छी तरह से -ोगी और प्र-ोगी बन ग-ाा तो बड़े से बड़े माइक का काम करेगा।

(लास एंजिलिस में भूकम्प आ-ाा है) -ो सम-ा के तीव्र गति की निशानि-ां सम-ा प्रति सम-ा प्रकृति दिखा रही है। अच्छा!

अव्-ावक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात

ग्रुप नं. १

फल की इच्छा छोड़ रहमदिल बन शुभ भावना का बीज डालते चलो

बापदादा द्वारा सर्व बच्चों को इस संगम-ुग पर विशेष कौन-सा खज़ाना मिला हुआ है? खज़ाने तो बहुत हैं लेकिन विशेष खज़ाना खुशी का खज़ाना है। तो खुशी का खज़ाना कितना श्रेष्ठ मिला है। तो -ाह सदा साथ रहता है -ाा कभी किनारे भी हो जाता है? जब अनगिनत मिलता है तो हर सम-ा खज़ाने को का-र्ा में लगाना चाहिए ना। लोग किनारे इसीलिए रखते हैं कि आइवेल में काम में आ-ोगा। लेकिन आपके पास तो अथाह है। इस जन्म की तो बात छोड़ो लेकिन अनेक जन्म -ाह खुशी का खज़ाना साथ रहेगा। अनगिनत है तो -ूज़ करो ना। बापदादा ने पहले भी सुना-ाा है कि प्राण चले जा-ें लेकिन खुशी नहीं जा-ो। इसलि-ो खुशी को कभी भी किनारे नहीं रखो और ही महादानी बनो। क-ोंकि वर्तमान सम-ा और कुछ भी मिल सकता है लेकिन सच्ची खुशी नहीं मिल सकती। अल्पकाल की खुशी प्राप्त करने के लि-ो लोग कितना सम-ा वा धन खर्च करते हैं फिर भी सच्ची खुशी नहीं मिलती। तो ऐसे आवश-ाकता के सम-ा आप आत्माओं को महादानी बनना है। कैसी भी अशान्त आत्मा, दु:खी आत्मा हो अगर उसको खुशी की अनुभूति करा दो तो कितनी दिल से दुआ-ें देगी। आप दाता के बच्चे हो तो फ्राकदिली से बांटो। बांटना तो आता है ना? तो क-ों नहीं बांटते हो? सम-ा को देख रहे हो? दिल से रहम आना चाहि-ो। जो अशान्ति-दु:ख में भटक रहे हैं वो आपका परिवार है ना। परिवार को सह-ोग दि-ाा जाता है ना। तो वर्तमान सम-ा महादानी बनने के लि-ो विशेष रहमदिल के गुण को इमर्ज करो। आपके जड़ चित्र वरदान दे रहे हैं। तो आप भी चैतन-ा में रहम दिल बन बांटते जाओ। क-ोंकि परवश आत्मा-ें हैं। कभी भी -ो नहीं सोचो कि -ो तो सुनने वाले नहीं हैं, -ो तो चलने वाले नहीं हैं। नहीं, आप रहमदिल बनो, देते जाओ। गा-ाा हुआ है कि भावना का फल मिलता है। तो चाहे आत्माओं में ज्ञान के प्रति, -ोग के प्रति शुभ भावना नहीं भी हो लेकिन आपकी शुभ भावना उनको फल दे देती है। ऐसे नहीं सोचो कि इतना कुछ सेवा की लेकिन फल तो मिला ही नहीं। लेकिन फल एक जैसे नहीं होते। कोई सीज़न का फल होता है, कोई सदा का फल होता है। तो सीज़न का फल सीज़न पर ही फल देगा ना। तो आपने शुभ

भावना का बीज डाला, अगर सीज़न का फल होगा तो सीज़न में निकलेगा ही। वैसे भी देखो जो खेती का काम करते हैं, तो जो सीज़न पर चीज़ निकलने वाली होती है तो -े नहीं सोचते हैं कि ६ मास के बाद -े निकलेगा इसलि-े बीज डालो ही नहीं। तो आप भी बीज डालते चलो। सम-ा पर सर्व आत्माओं को जगना ही है। आपकी रहम भावना, शुभ भावना फल अवश-ा देगी। अगर कोई आपोजिशन भी करता है तो भी आपको अपने रहम की भावना छोड़नी नहीं है और ही सोचो कि -े आपोजिशन -ा इन्सल्ट, गालि-ां--े खाद का काम करेंगी। तो खाद पड़ने से अच्छा फल निकलेगा। जितनी गालि-ां देंगे, उतना आपके गुण गा-ेंगे। इसलि-े हर आत्मा को दाता बन देते जाओ। अच्छा माने तो दें, नहीं। -े तो लेवता हो ग-े? लेने की इच्छा नहीं रखो कि वो अच्छा बोले, अच्छा माने तो दें। नहीं। इसको कहा जाता है दाता के बच्चे मास्टर दाता। चाहे वृत्ति द्वारा, चाहे वा-ाब्रेशन्स द्वारा, चाहे वाणी द्वारा देते जाओ। इतने भरपूर हो ना? सब खज़ाने हैं?

डबल विदेशि-ों को देख बापदादा डबल खुश होते हैं क-ों? डबल पुरुषार्थ करते हैं। एक तो अपना रीति-रस्म परिवर्तन करने का भी पुरुषार्थ करते हैं। बापदादा देखते हैं कि उमंग-उत्साह मैजारिटी में अच्छा है। अगर कभी उमंग-उत्साह बीच-बीच में नीचे-ऊपर होता है तो आज विधि सुनाई कि समा जाओ, स्नेह की गोदी में छिप जाओ, फिर मा-ा आ-ोगी ही नहीं। -े तो सहज है ना। बीज रूप होने में मेहनत है, इसमें मेहनत नहीं है। और कुछ भी नहीं आ-े लेकिन स्नेह में समाना तो आता है कि -े मुश्किल है? (नहीं) तो -े करो। अभी मुश्किल शब्द नहीं बोलना। नीचे आते हो तो छोटी-सी चीज़ बड़ी लगती है, ऊपर चले जाओ तो बड़ी चीज़ भी छोटी लगेगी। फ़रिश्ते हो -ा साधारण मानव हो? (फ़रिश्ता) फ़रिश्ता कहाँ रहता है? ऊपर रहता है -ा नीचे? (ऊपर) तो नीचे क-ों ठहरते हो, अच्छा लगता है? कभी-कभी दिल होती है नीचे आने की? नहीं, फिर क-ों आते हो? बाप का साथ छोड़ते हो तब नीचे आते हो।

तो डबल विदेशि-ों को डबल पुरुषार्थ का प्रत-ाक्ष फल डबल चांस है। इसका फ़ा-ादा लो। इस वर्ष में क-ा करेंगे? डबल सर्विस। महादानी-वरदानी बनेंगे -ा खुद बाप के आगे कहेंगे शक्ति दे दो औरों को भी शक्ति-ां दो। अच्छा है, हिम्मत रखने में नम्बर ले लि-ा। अभी फ़ास्ट पुरुषार्थ कर आगे उड़ते चलो।

ग्रुप नं. २

एक बल एक भरोसे द्वारा सदा एकरस स्थिति का अनुभव करो

सभी एक बल एक भरोसे का अनुभव करते हो? एक बल, एक भरोसे वाले की निशानी क्-ाा होगी? एक बल, एक भरोसे में रहने वाली आत्मा सदा एक रस स्थिति में स्थित होगी। एकरस स्थिति अर्थात् सदा अचल, हलचल नहीं। तो ऐसे रहते हो कि कभी हलचल, कभी अचल? हलचल के सम-ा एक बल, एक भरोसा कहेंगे -ाा अनेक बल, अनेक भरोसा कहेंगे? जब एक बाप द्वारा सर्वशक्ति-ााँ प्राप्त हो जाती हैं तो एक बल, एक भरोसा चाहि-े ना। एक को भूलते हो तभी हलचल होती है। तो अचल रहने वाले हो ना?

-ाहाँ आपका -ाादगार कौन-सा है? अचल घर है -ाा हलचल घर है? -ाा अचल घर कभी हलचल घर हो जाता है! -ाादगार आपका ही है ना। फिर हलचल में क्-ाों आते हो? प्रैक्टिकल का ही -ाादगार बना है ना। तो सदा -े -ााद करो कि एक बल एक भरोसे में रहने वाले हैं। क्-ाोंकि भक्ति में अनेक के ऊपर भरोसा रखकरके अनुभव कर लि-ाा ना तो क्-ाा मिला? सब कुछ गंवा लि-ाा ना। सत-ुग का इतना सारा धन कहाँ गंवा-ाा? भक्ति में गँवा-ाा ना। अच्छी तरह से अनुभव कर लि-ाा ना। तो जब भी कोई ऐसे हलचल की परिस्थिति आती है तो अपने -ाादगार अचल घर को -ााद करो। जब -ाादगार ही अचल घर है तो मैं कैसे हलचल में आ सकती हूँ! -े तो सहज -ााद आ-ेगा ना।

एकरस स्थिति का अर्थ ही है कि एक द्वारा सर्व सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति-ाों के रस का अनुभव करना। तो अनुभव होता है कि बीच-बीच में और कोई सम्बन्ध भी खींचता है? जब सर्व सम्बन्ध एक द्वारा अनुभव होता है तो दूसरे सम्बन्ध में आकर्षण होने की तो बात ही नहीं है। सर्व सम्बन्ध का अनुभव है कि कोई-कोई सम्बन्ध का अनुभव है? सर्व सम्बन्ध से बाप को अपना बना-ाा है कि कोई सम्बन्ध किनारे रख दि-ाा है? सर्व हैं कि एक-दो में अटेन्शन जाता है? कोई का भाई में, कोई का बच्चे में, कोई का पोत्रे में! नहीं? निभाना अलग चीज़ है, आकर्षित होना अलग चीज़ है। तो नष्टोमोहा हो? पाण्डवों को पैसे कमाने में मोह नहीं है? ट्रस्टी होकर कमाना अलग चीज़ है। लगाव से कमाना, मोह से कमाना अलग चीज़ है।

कभी धन में मोह जाता है? थोड़ा-थोड़ा जाता है? क-ा होगा, कैसे होगा, जमा कर लें, कुछ कर लें, पता नहीं कितने वर्ष के बाद विनाश होता है, दस वर्ष लगते हैं -ा ५० वर्ष लगते हैं.. -ो नहीं आता? नष्टोमोहा बनकर, ट्रस्टी बनकरके चलना और मोह से चलना कितना अन्तर है! नष्टोमोहा की निशानी क-ा होगी? कभी कमाने में, धन सम्भालने में दु:ख की लहर नहीं आ-ोगी। कभी कम, कभी ज़-ादा में दु:ख की लहर आती है? पोत्रा-धोत्रा थोड़ा बीमार हो ग-ा तो दु:ख की लहर आती है? नष्टोमोहा हैं? कुछ भी हो जा-ो बेफ़िक्र हो? नष्टोमोहा अर्थात् दु:ख और अशान्ति का नाम-निशान नहीं। ऐसे हो -ा बनना है? तो एक बल, एक भरोसा अर्थात् ज़रा भी दु:ख के लहर की हलचल नहीं हो। सदा -ो स्मृति स्वरूप हो कि सदा एक बल, एक भरोसे वाले हैं और आगे भी सदा रहेंगे। खुशी रहे कि मैं ही था, मैं ही हूँ और मैं ही बनूँगा। अच्छा!

ग्रुप नं. ३

स्थिति का आधार स्मृति है, स्मृति का परिवर्तन कर कर्म में श्रेष्ठता लाओ

सभी अपने को संगम-ुगी पुरुषोत्तम आत्मा-ें अनुभव करते हो? पुरुषोत्तम अर्थात् पुरुषों में उत्तम पुरुष। तो अभी साधारण नहीं हो पुरुषोत्तम हो। क-ोंकि ब्राह्मण अर्थात् श्रेष्ठ। ब्राह्मणों को सदा ऊंचा दिखाते हैं। मुख वंशावली दिखाते हैं ना। तो ब्राह्मण बन ग-ो अर्थात् श्रेष्ठ बन ग-ो। साधारण पुरुष आप पुरुषोत्तम आत्माओं की पूजा करते हैं क-ोंकि ब्राह्मण अर्थात् पवित्र बन ग-ो ना। तो पवित्रता की ही पूजा होती है। साधारण आत्मा भी पवित्रता को धारण करती है तो महान् आत्मा कहलाती है। तो आप सब पवित्र आत्मा-ें हो ना कि मिक्स आत्मा हो? थोड़ी-थोड़ी अपवित्रता, थोड़ी-थोड़ी पवित्रता! नहीं। पवित्र आत्मा बन ग-ो। तो पवित्रता ही श्रेष्ठता है। पवित्रता ही पूज-ा है। तो -ो नशा रहता है कि हम पुजारी से पूज-ा बन ग-ो? ब्राह्मणों की पवित्रता का गा-ान है। कोई भी शुभ का-र्ा होगा तो ब्राह्मणों से करा-ोंगे। अशुभ का-र्ा ब्राह्मणों से नहीं करा-ोंगे। अशुभ का-र्ा ब्राह्मण करें तो कहेंगे -ो नाम का ब्राह्मण है, काम का नहीं। तो आप नामधारी हो -ा कामधारी? नामधारी ब्राह्मण तो बहुत हैं। लेकिन आप जैसा नाम वैसा काम

करने वाले हो। साधारण आत्मा नहीं हो, विशेष आत्मा हो। -ो खुशी है ना। कल साधारण थे और आज विशेष बन ग-ो। तो विशेष आत्मा समझने से जैसी स्मृति होगी वैसी स्थिति होगी और जैसी स्थिति वैसे कर्म होंगे। चेक करो जब स्थिति कमज़ोर होती है तो कर्म कैसे होते हैं। कर्म में भी कमज़ोरी आ जा-ोगी और स्थिति शक्तिशाली तो कर्म भी शक्तिशाली होंगे। तो स्थिति का आधार है स्मृति। स्मृति खुशी की है तो स्थिति भी खुश। कर्म भी खुशी-खुशी से करेंगे। फ़ाउन्डेशन है स्मृति। तो बाप ने स्मृति बदल ली। साधारण से विशेष आत्मा बने तो स्मृति चेंज हो गई। चाहे कर्म साधारण हों लेकिन साधारण कर्म में भी विशेषता हो। मानो खाना बना रहे हो तो -ो तो साधारण कर्म है ना, सब करते हैं लेकिन आपका खाना बनाना और दूसरों के खाना बनाने में फ़र्क होगा ना। आपके -ाद का भोजन और साधारण भोजन में अन्तर है। वो प्रसाद है, वो खाना है। तो विशेषता आ गई ना। -ाद में जो खाना खाते हो -ा बनाते हो तो उसको ब्रह्मा भोजन कहते हैं। तो सदा -ाद रखना कि पुरुषोत्तम विशेष आत्मा-ें बन ग-ो तो साधारण कर्म कर नहीं सकते।

ग्रुप नं. ४

सदा विघ्न विनाशक बनने के लिए अपने मस्तक पर परमात्म हाथ का अनुभव करो

म्बे में सबसे ज-ादा पूजा किसकी होती है? गणेश की। गणेश को विघ्न विनाशक कहते हैं। आप सब विघ्न विनाशक हो? कोई विघ्न के वश तो नहीं होते हो? विघ्न विनाशक कौन बनता है? जिसमें सर्वशक्ति-ाँ हैं वही विघ्न विनाशक है। तो सर्वशक्ति-ां आपका जन्म-सिद्ध अधिकार हैं। सदा -ो नशा रखो कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ और सर्वशक्ति-ों को सम-ा प्रमाण कार्-ा में लगाओ। ऐसे नहीं कि सम-ा पर कार्-ा में नहीं लगाओ, सम-ा बीत जाने के बाद सोचो कि ऐसे करना चाहि-ो था। तो सभी विघ्न विनाशक हो? फ़लक से कहो कि हम मास्टर विघ्न विनाशक हैं। कितने भी रूप से मा-ा आ-ो लेकिन आप नॉलेजफुल बनो। मा-ा की भी नॉलेज है ना। अच्छी तरह से समझ ग-ो हो -ा

कभी घबरा जाते हो, न-ा रूप समझते हो। मा-ा से घबराते हो? कभी हार, कभी वार–ऐसे तो नहीं? मा-ा का जन्म कैसे होता है, पता है? जानते भी हो कि मा-ा का जन्म ऐसे होता है फिर भी जन्म दे देते हो! मा-ा से प्-ार है क-ा? तो नॉलेजफुल आत्मा कभी भी मा-ा से हार नहीं खा सकती। मा-ाजीत का टाइटल है, मा-ा से हार खाने वाले नहीं। बापदादा का सदा हाथ और साथ है तो सदा मा-ाजीत हैं। तो सदा साथ है -ा कभी अकेले भी हो जाते हो? कम्बाइन्ड रहते हो ना। अपने मस्तक पर सदा ही बाप की दुआओं का हाथ अनुभव करो। तो जिसके ऊपर परमात्म हाथ है वो विघ्न विनाशक होगा ना। जिसके ऊपर दुआओं का हाथ है वो सदा निश्चित और निश्चिन्त रहता है। सभी के मस्तक पर विज-ा का तिलक लगा हुआ है। -ाह अविनाशी तिलक है। तो विज-ा के तिलकधारी अर्थात् विघ्न विनाशक। सदा अमृतवेले विज-ा के तिलक को स्मृति में लाओ। भक्त भी रोज़ तै-ार होकर तिलक ज़रूर लगा-ेंगे। आपका तो अविनाशी तिलक है ही।

सभी सदा खुश रहते हो -ा खुशी कभी कम होती है, कभी बढ़ती है? ब्राह्मण जीवन की खुराक खुशी है। तो सदा खुराक खाते हो -ा कभी-कभी खाते हो? खुश नसीब हैं और खुशी की खुराक खाने वाले हैं और खुशी बांटने वाले हैं – -ो -ाद रहता है? दिल से निकलता है कि मेरे जैसा खुशनसीब और कोई हो नहीं सकता? सारे विश्व में और कोई है? लण्डन की महारानी वा अमेरिका का प्रेज़ीडेन्ट है? कोई नहीं? अगर लण्डन की रानी आपको ताज तख्त दे तो लेंगे? नहीं लेंगे? अभी भी ले लो, भविष्-ा में भी ले लेना। तख्त पर बैठेंगे तो ऑर्डर तो करेंगे ना। (बाबा का तख्त मिला है उस तख्त की ज़रूरत नहीं है) वो तख्त आजकल तख्त नहीं है, तख्ता है। इतना फ़िक्र होता है। और आप बेफ़िक्र बादशाह हो। ऐसी बेफ़िक्र जीवन, सारे कल्प में इस सम-ा जो अनुभव करते हो वो और कोई -ाुग में नहीं है। सत-ाुग में बेफ़िक्र होंगे लेकिन अभी आपको ज्ञान है कि फ़िक्र क-ा है, बेफ़िक्र क-ा है? वहाँ ज्ञान नहीं होगा।

बाम्बे वाले डबल बेफ़िक्र हो! क-ोंकि बाम्बे वालों को पता है कि बाम्बे अगर गई तो हम तो ठीक ही रहेंगे। देखो ना हलचल होती है लेकिन ब्राह्मण तो सेफ़ होते हैं। -ोग-ाुक्त आत्मा स्वत: ही सेफ़ हो जाती है। तो बाम्बे वाले डरते

तो नहीं हैं ना कि सागर आ जा-ोगा! पहले से ही नष्टोमोहा हो ग-ो। अच्छा, बाम्बे वालों ने क-ाा न-ाा प्लैन बना-ाा है? (कार -ात्रा का न-ाा बना-ाा है।) इससे माइक निकलेंगे ना? बाम्बे विश्व में बिज़नेस में नम्बरवन है। तो ज्ञान की बिज़नेस में कितना नम्बर है? वन नम्बर है ना। नम्बर टू तो चन्द्रवंश हो जा-ोगा। नम्बरवन सू-र्विंश। तो सू-र्विंशी हैं -ाा चन्द्रवंशी? सबमें नम्बर है तो इसमें पीछे कैसे हो सकता है। बाम्बे वालों ने साकार पालना भी ली है। -ो भी बाम्बे का भाग-ा है। अभी भी निमित्त बनी हुई बाप समान आत्माओं की पालना मिल रही है ना। तो इसमें भी नम्बरवन हो। देखना, फिर कभी टू, कभी वन नहीं बनना। सदा नम्बरवन रहना। बाम्बे वालों में हिम्मत अच्छी है। सेवा के क्षेत्र में, हर का-र्ा में हिम्मत रखते हैं। और जो हिम्मत रखते हैं उसको बाप की गुप्त मदद स्वत: ही मिलती है। और मदद की निशानी है कि हर का-र्ा सहज होता है। तो सहज लगता है -ाा कभी मुश्किल भी लगता है? मुश्किल को सहज बनाने वाले औरों की मुश्किल को मिटाने वाले हो। तो मुश्किल को सहज करने वाले ही विघ्न विनाशक हैं। अच्छा!

ग्रुप नं. ५

-ाद की शक्ति द्वारा सेकण्ड में मन-बुद्धि को एकाग्र करना और सेवा द्वारा ख़ज़ानों को बढ़ाना--ाह बैलेन्स ही ब्लैसिंग प्राप्त करने का साधन है

दा -ाद और सेवा दोनों का बैलेन्स रखने वाले हो? क-ोंकि -ाद से जो शक्ति-ों की वा गुणों की प्राप्ति होती है वो सेवा द्वारा औरों को देना है। तो दोनों ही अच्छी तरह से चेक करते हो? कि कभी सेवा ज-ाादा होती तो -ोग कम, कभी -ोग ज़-ाादा तो सेवा कम–ऐसे तो नहीं होता? सेवा करने से, जो खज़ाने मिले हुए हैं वह बढ़ते हैं, तो बढ़ाने की विधि आती है ना? तो सेवा में होशि-ार हो -ाा -ाद में होशि-ार हो? -ाद की शक्ति का अर्थ है कि जहाँ बुद्धि को लगाना चाहो, वहाँ लग जा-ो। ऐसी शक्ति है? जब चाहो, जहाँ चाहो, अपनी बुद्धि को लगा सकते हो -ाा टाइम लगेगा? कितने टाइम में लगा सकते हो? कोई भी वा-ुमण्डल है लेकिन कैसे भी वा-ुमण्डल के बीच अपने मन को, बुद्धि को कितने सम-ा में एकाग्र कर सकते हो? (सेकण्ड में) कहते हो -ाा करते

हो? कहना तो सहज है लेकिन एकाग्रता की शक्ति है वा नहीं है–वह सम-ा पर मालूम पड़ता है। परिस्थिति हलचल की हो, वा-ुमण्डल तमोगुणी हो, मा-ा अपने हिम्मत से अपना बनाने का प्र-ात्न कर रही हो फिर सेकण्ड में एकाग्र हो सकते हो -ा टाइम लगेगा? -ो अभ-ास सदा करते रहो तो सम-ा पर शक्ति का-र्ा में ला सकते हो। इसको कहा जाता है जब चाहे, जहाँ चाहे वहाँ स्थित हो सकते हैं। कितना भी व्-ार्थ संकल्पों का तूफ़ान हो लेकिन सेकण्ड में तूफ़ान आगे बढ़ने का तोहफ़ा बन जा-ो। ऐसी कन्ट्रोलिंग पॉवर हो तो ऐसी शक्तिशाली आत्मा कभी -ो संकल्प भी नहीं ला-ेगी कि चाहते तो नहीं, लेकिन हो जाता है। जो सोचा वो हुआ। ऐसे नहीं, सोचते हैं नहीं होना चाहि-ो और हो जा-ो। क-ोंकि अगर सम-ा पर कोई भी शक्ति काम में नहीं आई तो प्राप्ति के बजा-ा पश्चाताप करना पड़ता है। तो प्राप्ति स्वरूप बनो। बापदादा ने सभी आत्माओं को सर्वशक्ति-ाँ वर्से में दे दी। तो वर्से वाली चीज़ सदा -ाद रहती है। फ़लक से कहेंगे ना कि -ो शक्ति-ाँ हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार हैं।

सदा 'एक बाप दूसरा न कोई' इसी अनुभव में रहते हो ना? बस एक है, कि दूसरा-तीसरा भी हो जाता है? एक बाप ही संसार बन ग-ा। कोई आकर्षण नहीं, कोई कर्मबन्धन नहीं। अपने कोई कमज़ोर संस्कार का भी बन्धन नहीं? कोई कमज़ोर संस्कार हैं? कोई पुराना संस्कार अभी तक है? कभी थोड़ा रोब आता है? कभी छोटों के ऊपर रोब आता है? (क्रोध आता है) क्रोध तो रोब से भी बड़ा है। क्रोध आता है तो इसका अर्थ है कर्म का बन्धन है। पाण्डवों में क्रोध आता है और माताओं में मोह आता है। अभिमान भी आता है–मैं पुरुष हूँ, कभी बच्चों पर, कभी माताओं पर अभिमान आता है मैं बड़ा हूँ। अधिकार रखते हो कि -ो क-ों कि-ा! मेरी है, -ो समझते हो? सेवा के साथी हैं, न कि मेरे का अधिकार है। मेरा समझने से ही क्रोध, अभिमान -ा मोह आता है। अगर मेरा नहीं तो क्रोध भी नहीं आ-ेगा। माता-ें, बच्चों के ऊपर क्रोध करती हो? जब बहुत चंचलता करते हैं तो क्रोध नहीं करती?

जब बाप संसार है, मेरा बाबा है तो और सब मेरा-मेरा एक मेरे बाप में समा जाता है। तो अभी दिल में क-ा आता है? मेरा -ा तेरा? जैसे भक्ति में कहते हैं तेरा लेकिन मानते हैं मेरा तो ऐसे तो नहीं करते ना। मेरापन ही बोझ है, तो बोझ

को छोड़ना अच्छी बात है ना। तो सदा -ाह -ाद रखो कि हम -ाद और सेवा का बैलेन्स रखने वाले बाप के ब्लैसिंग के अधिकारी आत्मा-ें हैं।

ग्रुप नं. ६

सन्तुष्ट रहने का दृढ़ संकल्प लो तो सफ़लता सदा साथ रहेगी

कभी आवाज़ से परे रहना सहज अनुभव करते हो वा आवाज़ में आना सहज अनुभव करते हो? सहज क-ाा है? आवाज़ में आना -ाा आवाज़ से परे होना? आवाज़ से परे होना अर्थात् अशरीरी स्थिति का अनुभव होना। तो शरीर के भान में आना जितना सहज है, उतना ही अशरीरी होना भी सहज है कि मेहनत करनी पड़ती है? सेकण्ड में आवाज़ में तो आ जाते हो लेकिन सेकण्ड में कितना भी आवाज़ में हो, चाहे स्व-ं हो -ाा वा-ुमण्डल आवाज़ का हो लेकिन सेकण्ड में फुल स्टॉप लगा सकते हो कि कॉमा लगेगी, फुल स्टॉप नहीं? इसको कहा जाता है फ़रिश्ता वा अव्-ाक्त स्थिति की अनुभूति में रहना, व्-ाक्त भाव से सेकण्ड में परे हो जाना। इसके लि-े -े नि-ाम रखा हुआ है कि सारे दिन में ट्रैफ़िक ब्रेक का अभ्-ाास करो। -े क-ों करते हो? कि ऐसा अभ्-ाास पक्का हो जा-े जो चारों ओर कितना भी आवाज़ का वातावरण हो लेकिन एकदम ब्रेक लग जा-े। आत्मा का आदि वा अनादि लक्षण तो शान्त है, तो सेकण्ड में ऑर्डर हो कि अपने अनादि स्वरूप में स्थित हो जाओ तो हो सकते हो कि टाइम लगेगा? सुना-ाा था ना कि लगाना चाहें बिन्दी और लग जा-े क्वेश्चन मार्क तो क-ाा होगा? इसको किस अवस्था का अभ्-ाास कहेंगे? सभी फ़रिश्ते स्थिति का अभ्-ाास करते हो? अभी और अभ्-ाास करना है कि जितना सम-ा चाहे उतना सम-ा उस विधि से स्थित हो जा-ें। अभी देखो कोई भी प्रकृति की आपदा -ाा परिस्थिति की आपदा आती है तो अचानक आती है ना, और दिन प्रतिदिन अचानक -ाह प्रकृति अपनी हलचल बढ़ाती जाती है। -ाह कम नहीं होनी है, बढ़नी ही है। अचानक आपदा आ जाती है। तो ऐसे सम-ा पर समाने वा समेटने की शक्ति की आवश्-ाकता है। और कहाँ भी बुद्धि नहीं जा-े, बस बाप और मैं, बुद्धि को जहाँ लगाना चाहें वहाँ लग जा-े। क-ों-क-ाा में नहीं जा-े, -े क-ाा हुआ, -े कैसे होगा,

होना तो नहीं चाहि-ो, हो कैसे ग-ाा–इसको ब्रेक कहेंगे? तो उड़ती कला के लि-ो ब्रेक बहुत पॉवर फुल चाहि-ो। जब पहाड़ी पर ऊंचे चढ़ते हैं तो बार-बार क-ाा कहते हैं कि ब्रेक चेक करो, ब्रेक चेक करो। तो ऊंची अवस्था में जा रहे हो ना तो बार-बार -ो ब्रेक चेक करो। कोई भी संकल्प वा संस्कार निगेटिव से पॉजिटिव में परिवर्तन कर सकते हैं और कितने सम-ा में कर सकते हैं? सम-ा है एक सेकण्ड का और आप पांच सेकण्ड में करो तो क-ाा होगा? तो अटेन्शन इस परिवर्तन शक्ति का चाहि-ो। पहले स्व-ां को परिवर्तन करो तब विश्व को परिवर्तन कर सकते हो। तो स्व-परिवर्तक बने हो? पहले है स्व-परिवर्तक उसके बाद है विश्व परिवर्तक। क-ोंकि अनुभव होगा कि व्-ार्थ संकल्प की गति बहुत फ़ास्ट होती है। एक सेकण्ड में कितने व्-ार्थ संकल्प चलते हैं, अनुभव है ना। फ़ास्ट चलते हैं ना। तो ऐसे फ़ास्ट गति के सम-ा पॉवरफुल ब्रेक लगाकर परिवर्तन करने का अभ्-ास चाहि-ो। तो आज के दिन फ़रिश्तेपन का अभ्-ास कि-ा? सहज अनुभव हुआ कि मेहनत लगी? अभी सर्व आत्मा-ें आप शान्ति-सुख देने वाली फ़रिश्ते आत्माओं को -ाद करती हैं कि कोई फ़रिश्ते आ-ें और वरदान देकर जा-ें। तो वो फ़रिश्ते कौन हैं? आप हो? नशा रहता है ना कि हम ही कल्प-कल्प की श्रेष्ठ आत्मा-ें हैं। कितने बार -ाह पार्ट बजा-ाा है? -ाद है कि भूल ग-ो? फ़रिश्ता स्वरूप कितना प्-ारा है। क-ोंकि फ़रिश्ता दाता होता है, लेवता नहीं होता है। तो देने वाले दाता हो ना कि लेकर देने वाले हो? बाप से लेना अलग बात है। और आत्मा-ें कुछ दें तो आप दो ऐसे तो नहीं? फ़रिश्ता अर्थात् सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। तो सन्तुष्ट रहते हो कि कोई-कोई बात में असन्तुष्ट भी हो जाते हो? कुछ भी नीचे-ऊपर हो जा-ो, असन्तुष्ट होंगे? कोई इन्सल्ट कर दे तो भी सन्तुष्ट रहेंगे? कोई नीचे-ऊपर करने की कोशिश करे तो सन्तुष्ट रहेंगे? पक्का? कोई कमी हो जा-ो तो भी सन्तुष्ट रहेंगे? देखो, सोच-समझकर जवाब दो। कोई टीचर ने आपको कम पूछा, कम बोला तो सन्तुष्ट होंगे -ाा असन्तुष्ट होंगे? रिकॉर्ड मंगा-ें? कुछ भी हो जा-ो, दाता के बच्चे दाता हैं तो किसी भी बात में असन्तुष्ट नहीं हो सकते। सन्तुष्टता ब्राह्मणों का विशेष लक्षण है। स्व-ां से भी सन्तुष्ट और औरों से भी सन्तुष्ट। जो पार्ट मिला है उसमें सन्तुष्ट रहना ही आगे बढ़ना है। ऐसे सन्तुष्ट हो? माता-ें सन्तुष्ट देवी हो ना? सन्तोषी मां का पूजन होता है, वो कौन

हैं? आप ही हो ना। तो कुछ भी हो जा-ो अपनी विशेषता को सदा साथ रखो। अगर दृढ़ संकल्प है तो जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफ़लता है ही। दृढ़ संकल्प रखो कि सन्तुष्टता को कभी छोड़ना नहीं है तो सफ़लता आपके सदा ही साथ रहेगी। संकल्प में भी दृढ़ता, बोल में भी दृढ़ता और कर्म में भी दृढ़ता। ऐसे नहीं कि संकल्प तो दृढ़ कि-ाा था लेकिन कर्म में थोड़ा नीचे-ऊपर हो ग-ाा। नहीं। इस वर्ष सदा सन्तुष्ट रहना अर्थात् सफ़ल रहना, सफ़लता को नहीं छोड़ना है। कितना भी कड़ा पेपर आ जा-ो लेकिन सन्तुष्ट रहना है और सन्तुष्ट करना है। क-ोंकि आपका टाइटल है विश्व कल-ाणकारी।

जैसे आज के दिन को स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस कहते हैं तो सारा वर्ष ही समर्थ दिवस मनाना। व्यर्थ समाप्त। दृढ़ संकल्प अर्थात् बहुत तीव्र पुरुषार्थ के संकल्प वाले। तो पुरुषार्थी नहीं बनना, तीव्र पुरुषार्थी। अच्छा!

कितनी भी बड़ी कैसी भी
परिस्थिति हो प-ाार से, स्नेह से परिस्थिति
रूपी पहाड़ भी परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन
सकता है। पत्थर को पानी बना सकते हो। कैसा भी मा-ाा
का विकराल रूप वा रॉ-ाल रूप सामना करे तो सेकण्ड
में स्नेह के सागर में समा जाओ तो सामना करने की
मा-ाा की शक्ति समाप्त हो जा-ोगी। आपके
समाने की शक्ति छू-मन्त्र नहीं लेकिन
शिव-मन्त्र बन जा-ोगी।